प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

श्रीसमवसरण में संबोधि ग्रंथ पर प्रवचन

सहन करो सफल बनो : आचार्य महाप्रज्ञ

सरदारषहर 3 मई।

संबोधि ग्रंथ के रचनाकार राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने श्री समवरण में ग्रंथ प्रवचन करते हुए कहा कि सहन शक्ति सफलता का राज है। जो कष्ट सहे बिना धन को प्राप्त करता है वह उसका मूल्य नहीं समझ सकता और उसके लिए वह धन उन्माद पैदा करने वाला बन जाता है। जो कष्टों को सहन करने के बाद धन का अर्जन करता है वह उस धन का मूल्य समझता है। जो सुविधावादि होता है। ऐसो आराम में रहता है उसकी सुगति भी दुर्लभ है।

राष्ट्रसंत ने कहा कि मस्तिष्क की शक्तियां तब जागृत होती जब प्राण ऊर्जा संतुलित रूप से मस्तिष्क तक पहुंचती है। जो दिनभर सोता रहता है तो उसकी प्राण उर्जा का संतुलन नहीं रहता है और मस्तिष्किय शक्तियां पूर्ण विकसित नहीं हो पाती है। जो ब्रह्ममूर्हुत में निद्रा त्याग देता है वह दिनभर प्रसन्न रहता है। प्रातः ब्रह्ममुर्हूत में मेलाटॉनीन रसायन का स्राव होता है। यह स्राव प्रसन्नता को बढाने वाला है। जो ब्रह्ममूर्हत में जागता नहीं है उसके यह स्राव ठीक तरह से नहीं होता है इसी कारण चेहरे पर उदासीनता झलकती रहती है। इस स्राव पर कृतृम बिजली की चकाचौंध भी प्रभाव डालती है। आज वर्तमान जीवन शैली बदल गई है। इस जीवन शैली के कारण चिड़चिड़ापन बढ़ा है और धार्मिक राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक संगठनों में बिखराव पैदा हुआ। आज न कष्ट सहिष्णुता है और न ही दूसरों द्वारा कही गई बात को सहन किया जाता है। यह युग असहिष्णुता का युग है जो बाइस परिषहों को सहन नहीं कर सकता वह मुनि धर्म का पालन नहीं कर सकता। आचार्य महाप्रज्ञ ने कोल्ड स्टोरेज में रखे जाने वाले पदार्थों को कीटाणुओं का घर एवं बीमारियों को बढ़ाने वाला बताया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आत्मा ही कर्मों की कर्ता है, हर्त्ता है एवं भोक्ता है। जैन दर्शन ईश्वरवाद को नहीं मानता है। आत्मा परम शक्ति है इस दृष्टि से उसे ईश्वर माना जा सकता है। उन्होंने कहा कि न एकांत भाग्यवादी होना चाहिए और न एकांत पुरुषार्थवादी होना चाहिए। दोनों का अपना महत्व है। उन्होंने कर्मवाद को जैन दर्शन का मुख्य स्तंभ बताया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)